International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN Number: 2394-7519
IJSR 2014; 1(1): 31-34
© 2014 IJSR
www.sanskritjournal.com
Received: 18-09-2014
Accepted: 07-10-2014

डॉ. माधवी शर्मा
(प्राचार्य) डी. बी. (पी. जी.) महाविद्यालय, खेरली (अलवर)

Correspondence
डॉ. माधवी शर्मा
(प्राचार्य) डी. बी. (पी. जी.) महाविद्यालय, खेरली (अलवर)

प्रणय निदर्शक कालिदास

डॉ. माधवी शर्मा

कालिदास ने अपने काव्य सागर में प्रेम की नदियाँ बहाई है। कालिदास ने अपनी काव्य रूपी वाणी से सौन्दर्य एवं प्रेम की झंकार निस्सृत की है। नयनाभिराम रूप की मादक आकृतियों से चमत्कृत हो जाते है, वैसे ही प्रणयरस की अति मन्द्र, मादक तथा अति गहन स्रोत्सविनी प्रवाहित करके सहृदय रसिक जनों को, पाठकों को आत्मविभोर कर देते हैं। डॉ. रमाशंकर तिवारी ने लिखा है –''कालिदास ने काम को सृष्टि की मूल प्रेरक शक्ति के रूप में अपनी रचनाओं में चित्रित एवं प्रतिष्ठित किया है, उनकी अधिकांश नायक, नायिकाऐं काम की माया से अभिभूत हो जाती हैं और ऐसा आभास होने लगता है मानो संयम तथा शालीनता के सूत्र उनके हाथों से बिल्कुल छूट जायेंगे और वे सामान्य रोमांस के नायकों की बिरादरी में स्थान गृहण कर लेंगे। लेकिन कालिदास की साधना, काव्य सरस्वती, प्रेम की मूलवर्तिनी वृत्तियों तथा क्षुधाओं को जगाती हुई भी अन्ततः उन्हें 'शिव' की नियामक मर्यादाओं में बांध देती है। वस्तुतः काम की खुमारी तथा संयम की कठोरता, दोनों के नितान्त आवर्जक एवं प्रभविष्णु चित्र उनके काव्यों में उपलब्ध होते हैं।

ऐसा नहीं है कि कालिदास प्रेमोद्वेग की तलस्पर्शी प्रतिक्रियाओं से परिचित नहीं है अपितु सत्य यह है कि वह प्रेम के व्यक्तिगत संकीर्ण पक्षों की तुलना मे उसके श्रेष्ठतर एवं बृहत्तर पक्षों की वरीयता प्रदान करने के औचित्य की आभ्यंतर प्रतीति से अनुप्राणित है। प्रेम के आविर्भाव से हृदय विविध आकर्षक रंगों में रंगकर विस्मय गर्भित रूप गृहण कर लेता है। प्रणयानुप्राणित हृदय के दीप्ति, उल्लास आदि का सुंदर चित्रण संस्कृत काव्यकारों ने किया है। कालिदास इस प्रणय चित्रण के शिरमौर हैं। कालिदास ने अपनी रचनाओं में प्रेमानन्द का अत्यन्त प्रभावोत्पादक चित्रण किया है। हृदय में प्रणयदीप के प्रज्ज्वलित हो जाने पर हृदय से निकलने वाली ललित, मधुर, कोमल मरीचियाँ उस हृदय में प्रकाश का संचार करती है। मेघदूत कालिदास की इस मधुर चित्रण की मधुर चित्रमालिका है। प्रणय को कृत्रिम साधनों से अवरूद्व कर दिया गया है इसलिए वह प्रणय अपने प्रेमी (इष्ट) तक नहीं पहुंच पाता और अपने प्रेमी तक पहुंचने की वह राह ढूंढता है एवं अंततः वह मानस रूप में वहाँ पहुंचना चाहता है। मेघदूत में यक्ष इस प्रणय के वशीभूत होकर ही अपनी प्रिया को अपना दूसरा प्राण कहता है –

तां जानीथाः परिमितकयां जीवितं में द्वितीयं
दूरीभूते मयि सहचरे चक्रवाकीमिवैकाम्।
गाढोत्कठां गुरूषु दिवसेष्वेषु गच्छत्सु बालां
जातां मन्ये शिशिरमथितां पद्मिनां वान्यरूपाम्।।

प्रायः प्रणय के विषय मे साहित्यकारों की ऐसी मान्यता है कि वियोग की अवस्था में प्रेम कम हो जाता है, लेकिन कालिदास की मान्यता है कि संभोग के अभाव में प्रिय के प्रति अनुराग का रस कम होने के स्थान पर बढ जाता है और प्रेम राशि संचित हो जाती है। मेघदूत में प्रेम के इस शाश्वत संदेश को कालिदास ने यक्ष के माध्यम ये दिया है –

स्नेहानाहुः किमपि विरहे ध्वंसिनस्ते त्वभोगा।
दिष्टे वस्तुन्युपसितरसाः प्रेमराशि भवन्ति।।

इस प्रकार यह संदेश प्रेम राशि का संदेश है। परिस्थितियों की अवमानना कर स्नेह दीप के निरन्तर प्रज्ज्वलित रखने का उद्बोधन है। साथ ही वह अपनी प्राणवल्लभा को यह विश्वास भी दिलाना चाहता है कि उसके वियोग में प्रेम घटा नही है अपितु बढा ही है।

प्रेमी जन जब प्रेम के समुद्र में निमग्न हो जाता है तो उसे अपने प्रिय की प्रत्येक चेष्टा में प्रणय की अनुभूति होती है, क्योंकि उसके चक्षु प्रेममय हो गये हैं। कालिदास ने अभिज्ञान शाकुन्तलम् में कहा है–

स्निग्धं वीक्षितमन्यतोऽपि नयने यत्प्रेरयन्त्या तथा
यातं यच्च नितम्बयोर्गुरूतया मन्दं विलासादिव।
मा गा इत्युपरूद्वया यदपि सा सासूयमुक्ता सखी
सर्वं तात्किल मत्परायणमहो कामी स्वतां पश्यती।।

अन्य दृश्यों को देखते हुए जो शकुन्तला ने मुझे प्यार भरी नजरों से देखा, शकुन्तला के द्वारा नितम्बों के भारी होने के कारण जो विलासादि चेष्टा करते हुए चला गया था, मत जाओ इस प्रकार रोके जाने पर उसने जो सखियों से कहा वह सब मुझसे अनुरक्त होने के कारण कहा गया। कामी (प्रेमी) व्यक्ति हर दृश्य में,प्रत्येक घटना में अपने प्रेमरूपी स्वार्थ को ही देखता है।

ऐसे कालिदास ने प्रेमी हृदय में अंकुरित होते हुए प्रणय का अवलोकन नायक के शब्दों में मालविकाग्निमित्र नाटक में इस प्रकार है '' हे प्रिये! देखो, यद्यपि अभी तक तुमने अपनी व्याकुलता का कारण न तो खोलकर बताया है और न अनुमान से ही मुझे तुम्हारे मन की थाह लग रही है, तब भी मैं यही समझता हूँ कि हे रम्भोरू तुम मेरे लिए ही इतना विलाप कर रही हो।

कालिदास के काव्यों में प्रणय चित्रण की एक और अनूठी विशेषता है कि उन्होनें स्त्री एवं पुरूष दोनों के हृदय में ही प्रेम आविर्भाव को बताया है। प्रायः ऐसी अवधारणा है कि स्त्री में प्रेम की सुकुमारता एवं स्निग्धता पुरूष की तुलना में अधिक होती है, लेकिन कालिदास इससे सहमत नही है। माना कि स्त्री हृदय की जन्मजात कोमलता, नैसर्गिक एवं प्रेमद्रव्य से द्रवित होना होती है। लेकिन सत् पुरूषों के हृदय में आविर्भाव होने वाला प्रेम स्त्री के प्रेम के सदृश ही सच्चा, सान्द्र, सुकुमार एवं जन्म जन्तान्तर तक निर्वाह करने वाला होता है। चन्द्रमा की चांदनी, रंग–बिरंगे फववारे, नाना प्रकार के मणिरत्न, सुगन्धित जल, मनोहर हर्म्यतल, प्रिय मुखोच्छवास से हिलती हुई मदिरा, वीणा के साथ गाये जाने वाले गीत ये समस्त वस्तुऐं काम के उद्दीपन के लिए आवश्यक है। कामदेव के उद्दीपन के लिए प्रियतमाओं द्वारा की जाने वाली क्रियाओं को व्यंजित करते हुए कालिदास ने ऋतुसंहार में लिखा है–

नितम्बबिम्बैः सदुकूलमेखलैः स्तनैः सहाराभरणैः सचन्दनैः।
शिरोरूहैः स्नानकषायवासितैः स्त्रियों निदाघं शमयन्ति कामिनाम्।।
और
सचन्दनाम्बूव्यजनोद्भवानि लैः सहारयष्टि स्तनमण्डलार्पणैः।
सवल्लकीकाकलिगीतनिस्वनैर्विबोध्यते सुप्त इवाद्य मन्मथः।।

स्त्रियां चन्दनयुक्त, शीतलजल से भीगे हुए पंखे की शीतल पवन से या मोतियों के हारों की लटकती हुई झालरों से सुशोभित अपने पुष्ट उरोजों के संघर्षण से सोए प्रेमियों को जगाने के बहाने प्रणय देवता कामदेव को जगाया करती हैं।

(A.W. Ryder) राइडर ने ऋतुसंहार के विषय में लिखा है कि ऋतुसंहार में प्रत्येक ऋतु द्वारा प्रेमियों के हृदय में उद्रिक्त भावनाओं को अभिव्यंजित किया है। इसलिए ऋतुसंहार को प्रेम का तिथि पत्र ;स्वअमश् ब्समदकमतद्ध कहा जा सकता है। प्रो. मैक्डोनल ने कहा है– '' प्रकृति की रमणीयताओं के सजीव चित्रणों में, जिसमें प्रणय मूलक हृदय मूलक दृश्य बिखरे हुए हैं, कवि ने अत्यन्त निपुणतापूर्वक मानवीय भावों की अभिव्यक्ति को भी जोड दिया है। कदाचित कालिदास की कोई भी अन्य रचना प्रकृति के प्रति उनके अनुराग को, अन्वेक्षक की उनकी तीव्र शक्तियों को और नितान्त सजीव एवं चमकीले रंगों से युक्त भारतीय भूदृश्य का चित्रण करने में उनके नैपुण्य को इतनी आकर्षणता के साथ अभिव्यक्त नहीं करती''। शैक्सपीयर के समान ही कालिदास के लिए भी प्रकृति एक ऐसी चौखट थी जिस पर मानवीय प्रेम के चित्र चित्रित किए जा सकें, अंकित किए जा सकें। जैसे शेक्सपीयर प्रकृति के रागात्मक रूप से आकर्षित हुए उसी प्रकार कालिदास को भी प्रकृति अनुरागमयी धरातल पर ही आकर्षित करती है, इसलिए कालिदास ने प्रकृति को प्रेम की कडी से जोडने की चेष्टा की।

प्रणय में वियोग तथा संयोग की स्थिति अपना स्वरूप परिवर्तित कर लेती हैं क्योंकि उनकी प्रतीति तथा अप्रीति सुखद तथा दुखद बन जाती है अर्थात् प्रिया या प्रियतम से मिलन की अवस्था में प्रकृति तथा सृष्टि के हर दृश्य में हर वस्तु में सुख की अनुभूति होती है। इसका चित्रण कालिदास ने विक्रमोवर्शीय के तृतीय अंक के अंतिम श्लोक में किया है। पुरूवा अपनी प्रियतमा ऊर्वशी के प्रणय में आसक्त हृदय के उद्गार व्यक्त करता है– 'हे सुन्दरि ! चन्द्रमा की वे ही किरणें आज शीतलता दे रही हैं और कामदेव के बाण हृदय को आल्हादित कर रहे हैं। जो–जो वस्तुऐं तुम्हारे वियोग में कठोर एवं दाहक प्रतीत होती थीं आज वे ही कोमल एवं शीतल प्रतीत हो रही हैं। इसके विपरीत शकुन्तला के वियोग में राजा दुष्यन्त के लिए प्रेमी जन के प्रेम को दीप्त करने वाली वस्तुऐं हृदय को विदीर्ण कर रही हैं। चन्द्रमा की वे शीतल किरणें जिनका स्पर्श तुम्हारे संयोग की अवस्था में सुखकर लगता था आज दाहक अर्थात् ऊष्ण लग रही हैं। कामदेव के पुष्प रूपी अतिशय कोमल बाण आज बज्र के समान कठोर बनकर हृदय पर प्रहार कर रहे हैं। ऐसा प्रतिकूल प्रभाव इसलिए है क्योंकि ये सब उसे अपनी प्रियतमा का स्मरण करा रहे हैं, लेकिन वह अपनी प्रियतमा से वियुक्त है। एक समान वस्तुओं का संयोग एवं वियोग में ऐसा प्राकृतिक चित्रण कालिदास की तूलिका से ही संभव था, क्योंकि कालिदास मानवीय हृदय के चित्रण के कुशल चित्रकार हैं।

वियोगजनित दुःख के बाद जो संयोगजनित सुख मिलता है वह बडा रसीला होता है। वृक्ष की सघन छाया उसी व्यक्ति को सुखद व रूचिकर लगती है कि आतप से तपा है।

कालिदास ने संयोग व वियोग की प्रणय अवस्था को निशा के चित्रण से भी वर्णित किया है। अभिज्ञान शाकुन्तलम् में प्रियतम के विरह में रात्रि लम्बी प्रतीत होती है और ये रात्रि प्रियतम के मिलन के इन्तजार में बडी दुरूहता से व्यतीत होती हैं। प्रणयी से मिलन की आशा का बन्धन लम्बी रात्रि को व्यतीत करने में सहायक होता है। दूसरी तरफ विक्रमोर्वशीय नाटक में उर्वशी से मिलन के बाद नायक कहता है मेरी एक अभ्यर्थना है। मनोरथ पूर्ण होने के पहले रातें जैसी सौगुनी लम्बी जान पडती थी, यदि वे अब तुम्हारे मिल जाने पर वैसी ही लम्बी हो जाऐं तो मैं अपने को परम भाग्यशाली समझूंगा।

कालिदास का मत है कि जब हृदय में प्रेम का उदय हो जाता है तो उसकी दृष्टि प्रेममयी हो जाती है। प्रणयी जन का हृदय कोमल हो जाता है और वह सबको प्रणयाभिसार रत देखना चाहता है। मेघदूत में कालिदास ने इसीलिए विरही यक्ष के माध्यम से मेघ को कहा है–

गच्छन्तीनां रमणव सतिं योषितां तत्र नवत्तं
रूद्धालोके नरपतिपथे सूचिभेद्यैस्तमोभिः।
सौदामन्या कनकनिकषस्निग्धा दर्शर्वोर्वो
तोयोत्सर्गस्तनितमुखरो मा स्म भूर्विक्लवास्ताः।।

प्रणय कातर यक्ष मेघ से अनुरोध करता है कि प्रणयाभिसार करने वाली कामनियों का पथ आलोकित कर, वह उनके प्रिय समागम में सहायक के रूप सहायता पहुंचाएगा। वस्तुतः प्रेम द्रव से ओत–प्रोत मानव मन में करूणा एवं सहानुभूति के अतिरिक्त अन्य तत्व प्रविष्ट हो ही नहीं सकते।

कालिदास ने प्रणय के उच्चतम आदर्श के रूप में कुमारसम्भव महाकाव्य की नायिका पार्वती को माना है। पार्वती कालिदास की आदर्श प्रेमिका है। सौन्दर्य प्रेम का पोषक तत्व है। सौन्दर्य के माध्यम से ही प्रेम परिपुष्ट होता है। ''निनिन्द रूपं हृदयेन पार्वती प्रियेषु सौभाग्यफला ही चारूता''। कालिदास ने तो यहां तक कह दिया कि प्रेम के द्वारा ही स्त्रियां पति के शरीर का आधा हिस्सा बन जाती है।

समाधिदेशैकवधूं भवित्रीं प्रेम्णा शरीरार्द्ध हरां हरस्य। प्राचीन साहित्य में लिखा है – ''पार्वती की दृष्टि में कोई अभाव, कोई दैन्य भाव शंकर में दिखाई नहीं पडा। उन्होंने उन्हें भाव की दृष्टि से देखा

था। उस दृष्टि में धन, रत्न, रूप और यौवन की कोई खोज नहीं थी। कठोर अपमान के अनन्तर भी शकुन्तला का प्रेम, मिलन काल में दुष्यन्त किसी अपराध के कारण मलिन नहीं हुआ। उस समय दुःखिनी के दोनों नेत्रों से आंसुओं की झडी बंध गई। जहाँ प्रेम नहीं वहां पद–पद पर अपराध की गणना होती है। पार्वती के प्रेम ने जैसे अपनी ही सौन्दर्य सम्पत्ति से सन्यासी को सुन्दर और ईश्वर की दृष्टि से दुष्यन्त के सारे अपराधों को भुलाकर देखा था। युवक–युवती के मोह–मुग्ध प्रेम में ऐसी क्षमा कहाँ ''।

कालिदास ने यद्यपि किसी भी बन्धन से बिना जुडे हुए प्रेम की शक्ति को स्वीकार किया है। लेकिन यदि इस प्रेम में दैहिक समर्पण है तो वह प्रेम संभोग को अस्वीकार करता है।'' जो प्रेम तपोवन में यति के तप का बाधक होकर प्रकट होता है, गृहस्थ के गृहप्रांगण में संसार धर्म को अकस्मात् नष्ट करने के रूप में प्रकट होता है, वह झंझावात के समान दूसरे को भले ही नष्ट कर दे, किन्तु अपना नाश भी अपने ही साथ लाता है''। इस प्रकार कालिदास प्रेम को धर्म के बन्धन में बांधने के पक्षधर है। कुमार संभव में कालिदास ने कहा है –

धर्मेणापि पदं शर्वे कारिते पार्वतीं प्रति।
पूर्वापराधभीतस्य कामस्योच्छवासितंमनः।।

जब कामदेव धर्म की अवहेलना कर नर–नारियों को परस्पर मिलाना चाहता है, तब वह भस्म हो जाता है और प्रेमियों को भी अकल्पित यातनाऐं सहनी पडती हैं। जब धर्म ने महादेव के मन को पार्वती की ओर आकृष्ट किया तब पूर्वापराधभीत कामदेव का मन उच्छवासित हुआ।

वाचं न मिश्रयति यद्यपि मद्वचोभिः कर्णं ददात्यभिमुखंमाम् भाषमाणे।
कामं न तिष्ठति मदाननसं मुखीना भूमिष्ठ विषया न तु दृष्टिरस्याः।।

यद्यपि वह अपनी वाणी को मेरी वाणी से नहीं मिलाती तथापि जब मैं बोलने लगता हूँ तो कान लगाकर मेरी बातें ध्यान से सुनती है। यद्यपि वह मेरी तरफ मुख करके खडी नहीं होती है तथापि उसकी दृष्टि समस्त विषयों से हटकर मेरी ही ओर आकर ठहर जाती है।

स्फुरित होने वाली प्रणय की धारायें जब हृदय में हिलोरें लेती हैं तो मदन की आभ्यंतरिक उद्बुद्धियों का प्रकाश भीतर नहीं रूक पाता और शारीरिक चेष्टायें उस आविर्भूत होते हुए मदन को व्यक्त कर देती हैं –

अभिमुखे मयि संहृतमीक्षितं हसितमन्यनिमित्तकृतोदयम्।
विनय वारित वृत्तिरतस्तया न विवृतो मदनः न च संतृप्तः।।

मेरे द्वारा जब उसे सामने से देखा जाता तो वह मुझ पर से अपनी दृष्टि हटा लेती थी और किसी न किसी बहाने से हंस भी जाती थी। वह शकुन्तला शील रूपी गुण के कारण न तो अपने मन में उपजे हुए प्रणय भाव को छिपा ही पा रही थी और न स्पष्टतः उजागर ही कर पा रही थी किन्तु उसकी चेष्टाऐं यह प्रदर्शित कर रही कि वह दुष्यन्त के प्रणय–पाश में निबद्ध हो चुकी है।

दर्भाङ्कुरेण चरणः क्षत इत्यकाण्ड़े तन्वी स्थिता कतिचिदेन पदानि गत्वा ।
आसीद्विवृत्तवदना च विमोचयन्ती शाखासु वल्कलमसक्तमपि द्रुमाणाम्।।

जाते समय वह शकुन्तला ने शीलत्व की रक्षा करते हुए भी अपने हृदय के प्रेम को व्यक्त कर दिया क्योंकि कुछ कदम चलने पर ही वह कृशांगी शकुन्तला यह कहकर रूक गयी कि पांव में कांटा चुभ गया है न उलझे हुए वल्कल वस्त्र को सुलझाने का बहाना बनाकर मेरी ओर देखने लगी और रूक गई। दुष्यन्त विश्वस्त है कि शकुन्तला ने उसके प्रति प्रेम को व्यक्त किया है क्योंकि उसके पैर में कांटा चुभने तथा वल्कल वस्त्र को छुडाने का बहाना ये हाव–भाव प्रेमासक्ति के द्योतक हैं।

इस प्रकार कालिदास के प्रणय निदर्शन में स्पष्ट किया है जब नारी के हृदय में प्रेम का आविर्भाव होता है तो वह इसका संकेत वाणी के द्वारा नहीं अपितु आंगिक हाव–भाव के द्वारा प्रकट करती है। इस तथ्य को उन्होंने पूर्व मेघ में यक्ष के माध्यम से कहा है –

वीचि क्षोभस्तनित विहगश्रेणिकाञ्चीगुणायः।
संसर्पन्याः स्खलितसुभगं दर्शितावर्तनाभेः।
निर्विंध्यायाः पथि भवरसाभ्यन्तरः सन्निपत्य
स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु।।

मार्ग के लहरों के चलने से शब्द करते हुए पक्षिगण ही जिनकी करधनी के समान हैं पत्थरों पर गिरती हुई मानो मद से गिरती हुई मनोहरता के साथ बहने वाली तथा जल– भंवर रूपी नाभि को दिखाने वाली निर्विंध्या नदी के पास पहुंच कर उसका रसास्वादन करो क्योंकि स्त्रियाँ अपने प्रिय के प्रति पहली प्रेम प्रार्थना को विलास चेष्टा (आंगिक चेष्टा) द्वारा अभिव्यक्त करती है। इस प्रकार कवि ने अंगज प्रणयाभिव्यक्ति के अवलोकन का गहनता से मनन किया तदुपरान्त अपनी तूलिका का आश्रय लेकर शब्दों के माध्यम से पन्नों पर अंकित किया है। कालिदास मालविकाग्निमित्र में प्रेम को निर्देशित करते हैं– प्रेम के वृक्ष की जडें प्रियतमा के सौन्दर्य के श्रवण से उत्थित आशा में जमती हैं, प्रिया के नयनगोचर होने पर उत्पन्न राग उसके पत्तों के रूप में प्रकाश करता है, प्रिया के हाथ के स्पर्श से उठे रोमांच उसके फूल हैं और उसके संयोग का सुख तरूवर का फल है जिसकी चर्वणा के निमित्त प्रेमी लालायित रहते हैं।

तामांश्रित्य श्रुतिपथगतामाशया बद्धमूलः ।
सम्प्राप्तायां नयन विषयं रूढरागप्रवालः।।

विक्रमोर्वशीय नाटक में उर्वशी के नेत्र पुरूरवा के सौन्दर्य का पान कर रहे हैं। उर्वशी जब पुरूरवा से विदा लेती है तो लता की शाखा में वैजयन्ती माला के फंसने का नाट्य कर, राजा की ओर घूमकर देखने का अवसर निकाल लेती है। राजा उर्वशी की चेष्टा को देखकर कहता है–

अहो दुर्लभाभिलाषी मदनः
एषा मनो मे प्रसभं शरीरात्पितुः पदं मध्यममुत्पतन्ती
सुरांगना कर्षति खण्डिताग्रात्सूत्रं मृणालादिव राजहंसी।।

प्रणय मनुष्य की सच्ची कसौटी है जिसमें उसका नग्न एवं सुसंस्कृत दोनों प्रकार का सौन्दर्य समग्रता के साथ अभिव्यक्ति पाता है। कालिदास ने प्रेमिका के सौन्दर्य के स्पर्श भोग के लिये लालायित प्रणयी नायक का चित्रण भ्रमर के माध्यम से किया है।

चलापाङ्गं दृष्टिं स्पृशसि बहुशो वेपथुमतीं।
रहस्याख्यायीव स्वनसि मृदुःकर्णन्तिकचरः।।
करौ व्याधुन्वत्याः पिबसि रतिसर्वस्मधरं।
वयं तत्वान्वेषान्मधुकर! हतास्त्वं खलुकृती।।

हे भ्रमर! तुम वस्तुतः भाग्यशाली हो क्योंकि तुम चंचल नेत्रों वाली कंपायमान होती हुई शकुन्तला का बार–बार स्पर्श कर रहे हो, उसके कानों के पास जाकर, शनैः शनैः ऐसे गुंजन कर रहे हो जैसे कोई गुप्त बात उसके कानों में कहना चाहते हो या उससे सुनना चाहते हो बार'–बार हाथों से झटकने या हटाने पर भी तुम उसके रतिकाल में सर्वस्व माने जाने वाले अधरोष्ठ का पान कर रहे हो।

कालिदास प्रणय की मादक मन्दाकिनी में निमग्न होने के लिए सौन्दर्य को आकर्षण का सहायक मानते हैं। कालिदास ने अनाहूत प्रेम में उन्मत्त सौन्दर्य की उपेक्षा नहीं की अपितु उसे तरूण लावण्य के समुज्ज्वल रंगो से चित्रित किया है।

आवर्जिता किंचिदि स्तनाभ्यां वासो वसाना तरूणकिरागम्।
पर्याप्तपुष्पस्तबकावनम्रा संचारिणी पल्लविनी लतेव।।

'स्तनों के बोझ से झुके हुए शरीर पर प्रातःकाल के सूर्य के समान लाल कपडे पहने हुई पार्वती ऐसी प्रतीत हो रही थी जैसे फूलों के गुच्छों के भार से झुकी नई लाल कोंपलो वाली चलती फिरती लता हो इसी प्रकार

अधरः किसलयरागः कोमल विटपानुकारिणौ बाहू
कुसुमिव लोभनीयं यौवनमङ्गेषु सन्नद्धम।।

अधरोष्ठ नूतन किसलय के समान हैं भुजा कोमल वृक्ष की शाखाओं के समान हैं, पुष्प के समान आकर्षक यौवन इसके अंगो में बह रहा है। कालिदास सहज निरऽलंकृत सौन्दर्य के उपासक हैं और ऐसा अनुपम सौन्दर्य ही आकर्षण का केन्द्र बनकर ह्रदय में प्रेम का उदय करता है। शकुन्तला के ऐसे ही प्राकृतिक सौन्दर्य के आकर्षण में निबद्ध दुष्यन्त उसके प्रेम पाश में आबद्ध हो, कह उठता है।

सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापिरम्यं
मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति
इयमधिक मनोज्ञा वल्कलेनाऽपि तन्वी
किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्।।

ऐसी कौनसी वस्तु है जो मधुर आकृतियों का मण्डन न बन जाए? कमल का फूल शैवालजाल से अनुबिद्ध होकर भी रमणीय बना रहता है। चन्द्रमा का काला धब्बा मलिन होकर भी शोभा का विस्तार करता है और उसी प्रकार तन्वी वल्कल वेष्टिता होने पर भी मनोज्ञा बन गई है।

कालिदास के प्रणय चित्रण में अन्तस की कोमलता प्रिय की सुख प्राप्ति की अगाध लालसा, प्रिय के प्ररूढ स्नेह की सत्यता के प्रति उसका अगाध विश्वास इन सबका अत्यन्त ह्रदय स्पर्शी रूप में किया है।

प्राचीन साहित्य में कालिदास के विषय में लिखा है – ''जिस समय धर्म ने तपस्वी और तपस्विनी का मिलन साधन किया उस समय स्वर्ग और मर्त्य इस प्रेम के सहायक और साथी हुए इस प्रेम के आह्वान में सप्तऋषियों का शासन डिगा और इस प्रेम का उत्स लोक लोकान्तर में व्याप्त हुआ इसमें न तो कोई गूढ षडयंत्र था और न ही असमय में बसन्त का ही उदय हुआ था और न ही छिपे–छिपे कामदेव ही अपना निशाना तान रहा था। इस उत्सव की जो अम्लान शोभा थी वह समस्त संसार के आनन्द की सामग्री थी। सारे संसार ने इस शुभ मिलन के निमन्त्रण में योग देकर इसे सुसम्पन्न किया था।''

कालिदास का मानना है प्रेम का शान्त संयमित तथा धर्म की सीमाओं में आबद्ध प्रेम ही श्रेष्ठ है। इस विषय में रविन्द्र नाथ ठाकुर ने प्राचीन साहित्य में लिखा है। ''तपोवन में सिंह शिशु के साथ नर शिशु का जैसे क्रीडा कौतुक है वैसे ही उनके काव्य तपोवन में योगी और गृही के भाव समन्वित है। काम की करतूत ने उस पर बज्र निपात करके तपस्या द्वारा कल्याणमय गृह के साथ अनासक्त तपोवन का सुपवित्र सम्बन्ध फिर से स्थापित किया है और कामदेव के हठात आक्रमण ने नर नारी के पवित्र सम्बन्ध का उद्धार कर उसे तप और निर्मल योगासन के ऊपर प्रतिष्ठित किया है। भारतीय शास्त्रों में नर नारियों का संयत सम्बन्ध कठिन अनुशासन के रूप में आदिष्ट है और वही कालिदास के काव्यों में सौन्दर्य के उपकरणों से सुसंगठित हुआ है। यह सौन्दर्य श्री ह्रिलीं और कल्याण से उद्भासित हैं। गम्भीरता की ओर से नितान्त एकाकी और व्याप्ति की ओर से विश्व का आश्रय स्थल है। वह त्याग से परिपूर्ण दुःख से चरितार्थ और धर्म से ध्रुव निश्चित है। इसी सौन्दर्य से नर नारियों के दुर्निवार और दुर्गम प्रेम के प्रलयकारी वेग ने अपने को संयत करके मंगलरूपी महासमुद्र में स्थिरता प्राप्त की है। इसी से वह संयत प्रेम बन्धन विहिन दुर्द्धम प्रेम की अपेक्षा महान और आश्चर्य जनक है। ''